IJCRM

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Paper

राष्ट्रवाद का उदय तथा वैश्वीकरण: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. नरेंद्र सीमतवाल[1]*, महेन्द्र कुमार वर्मा[2]

[1]सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, किशनगढ़, अलवर, राजस्थान, भारत

[2]राजनीति विज्ञान, अलवर, राजस्थान, भारत

Corresponding Authors: * **डॉ. नरेंद्र सीमतवाल**

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10907863

सारांश

यह शोध पत्र राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है। राष्ट्रवाद के उदय और विकास के संदर्भ में इसने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण किया है। साथ ही, वैश्वीकरण की प्रक्रिया और इसके प्रमुख कारकों को भी ध्यान में रखते हुए, इसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, संचार, तकनीकी उत्पादन, और सांस्कृतिक विनिमय के प्रभावों का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में, राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के संबंध में उठने वाली चुनौतियों और नई संभावनाओं पर भी विचार किया गया है। यह शोध पत्र राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के महत्वपूर्ण मामलों को समझने और उनका समाधान करने के लिए नई दिशाओं का रास्ता दिखाता है।

शोध पत्र मुखतः राष्ट्रवाद पर केन्द्रित है जो इतने कम समय में ही राष्ट्रवाद उतना मजबूत और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाने वाला सिद्धान्त बन गया। राष्ट्रवाद और आधुनिक समय में क्या जुडाव है। राजनीतिक समुदाय हमेशा राष्ट्र-राज्य के रूप में संगठित नहीं थे।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 01-03-2024
- **Accepted:** 30-03-2024
- **Published:** 02-04-2024
- **IJCRM:**3(2);2024:127-130
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. आधुनिक परिप्रेक्ष में नारीवाद: एक समीक्षात्मक अध्ययन. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(2): 127-130.

कूटशब्द: स्वतंत्रता, गणराज्य, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय एकता, साम्राज्यवाद विरोधी, राष्ट्रनिर्माण, स्वाधीनता, स्वतंत्रता, राष्ट्रीय आत्मविश्वास, विश्व, ग्लोबलाइजेशन, सांस्कृतिक विनिमय, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, विदेशी नीति, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, ग्लोबल इकोनॉमी, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, विश्वासीकरण।

प्रस्तावना

राष्ट्रवाद के विचार को समझने से पूर्व यह जान लेना बहुत जरूरी है कि राष्ट्र राज्य के लिए के लिए आवश्यक है कि लोग समान इतिहास, परम्परा, भाषा और संस्कृति के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। तथा अपना एक प्रभुसता सम्पन्न समुदाय हो। यह प्रभुसता सम्पन्न सामुदाय ही राष्ट्र है। कई बार राष्ट्र तथा राज्य शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची शब्दों के रूप में किया जाता है लेकिन इन शब्दो के अलग-2 अर्थ हैं। दरअसल राष्ट्रवाद के बारे में सबसे बुनियादी विश्वास के अनुसार स्वंय को राष्ट्र के रूप में मानने वाले हर समुदय के पास उसका अपना राज्य होना चाहिए। हैन्स कोन के अनुसार "राष्ट्र-राज्य की मांग करता है राष्ट्र-राज्य का निर्माण राष्ट्रवाद को मजबूत करता है।" मैक्स वैबर तर्क देते हैं कि "राष्ट्र भावनाओं का एक समुदाय है, जो खुद को अपने राज्य में सही तरीके से अभिव्यक्त करता है।" राष्ट्रवाद एक ऐसी विचारधारी है या आन्दोलन है जो एक विशिष्ट राष्ट्र-राज्य की स्थापना करनी चाहता है या उसकी शक्ति को मजबूत करना चाहता है।

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य

राष्ट्रवाद के इतिहास, विकास, और प्रमुख घटनाओं का विश्लेषण किया जाएगा । राष्ट्रवाद के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाएगा, विशेष रूप से राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में। राष्ट्रवाद के विभिन्न प्रकार और उनके परिप्रेक्ष्य का विवेचन किया जाएगा। राष्ट्रवाद के संबंध में वैश्विकरण के साथ उत्पन्न होने वाली चुनौतियों और संभावनाओं का विचार किया जाएगा । अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के राष्ट्रवाद पर प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा । विभिन्न राष्ट्रवादी दर्शनों और उनकी प्रमुख धाराओं का विवेचन किया जाएगा। वैश्विकरण के उदय के प्रमुख कारकों का विश्लेषण किया जाएगा। वैश्विकरण के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक प्रभाव का विवेचन किया जाएगा। राष्ट्रवाद और वैश्विकरण के संबंधों का विवेचन किया जाएगा।

अध्ययन की परिकल्पना

यह अध्ययन राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के महत्वपूर्ण मामलों को समझने और उन्हें विश्लेषण करने के लिए निर्धारित किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रवाद के सिद्धांतों, विकास के प्रक्रिया, और वैश्विकरण के प्रभाव को विस्तार से अध्ययन करना है। हम विभिन्न स्रोतों से समृद्ध डेटा और विवरणों को विश्लेषण करेंगे ताकि हम राष्ट्रवाद के प्रमुख सिद्धांतों, इतिहास, और विभिन्न प्रकारों को समझ सकें। वैश्विकरण के लिए राष्ट्रवाद की चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करने के लिए, हम अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, विदेशी नीतियों, और व्यापार के क्षेत्र में विशेष ध्यान देंगे । अध्ययन के परिणामस्वरूप, हमें राष्ट्रवाद और वैश्विकरण के बीच के संबंधों को समझने में मदद मिलेगी, और यह हमें विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय नीतियों के लिए नए समाधानों की दिशा में मार्गदर्शन करेगा।

राष्ट्रवाद के विचार का इतिहास

यह एक आधुनिक कल्पना है जिसका विकास पुर्नजारण के बाद यूरोप में राष्ट्र-राज्य के रूप हुआ। राष्ट्रवाद का उदय 18-19 वीं शताब्दी में यूरोप में हुआ था । राष्ट्रवाद के प्रतिपादक जॉन गॉटफ्रेड हर्डर थे जिन्होंने पहली बार इस शब्द का प्रयोग करके जर्मन राष्ट्रवाद की नींव डाली । राष्ट्रवाद के आधार पर जब किसी राष्ट्र-राज्य की स्थापना हो जाती है तो उसकी सीमाओं में रहने वालों से अपेक्षा की जाती है कि वे राष्ट्र के प्रति निष्ठावान रहेंगे । राष्ट्रवाद और देशभक्ति में अन्तर है। राष्ट्रवाद अनिवार्य तौर पर किसी मैं किसी कार्यक्रम और परियोजना का वाहक होता है जबकि देशभक्ति की भावना रूपी ऐसी किसी शर्त की मोहताज नहीं है । मध्ययुगीन यूरोप में राजनीतिक शक्ति किसी एक प्रभुता संपन्न शासक या सरकार के हाथों में केन्द्रित नहीं थी। इस युग में राजनीतिक शक्ति विभाजित थी। यहाँ ईसाईयत या चर्च भी शक्तिशाली होता था। रोमन साम्राज्य में हर जगह चर्च के प्राधिकर का प्रभाव हो गया था।

सामंतवाद

यूरोप में यह व्यवस्था पूरे मध्ययुग के दौरान कायम रही। यह व्यवस्था ऊंचे स्तर के शासक और उसने अधीन सांगतो के बीच परस्पर दायित्व पर आधारित थी। मध्य युग की राजतंत्रों की अर्थव्यवस्था खेतों पर निर्भर थी। पूर्व - आधुनिक यूरोप में ऐसे बहुत से कदम थे जिनके कारण एक ऐसा केंद्रीकृत राजनीतिक समुदाय नहीं बन सका, जिसके पास एक सुनिश्चित भू-क्षेत्र और सुनिश्चित जनसंख्या हो। धीरे-धीरे पूरोप के राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया। पूँजीवाद ने सामंतवाद की जगह ले ली। इसमे राजाओं को अपने शासन के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में निरंकुश शक्ति का प्रयोग करने का मौका मिला। इस तरह राष्ट्रवाद कई चरणों से गुजर चुका है। 19वीं शताब्दी के यूरोप में इसने कई छोटी - छोटी रियासतों के एकीकरण बृहत्तर राष्ट्र राज्यों की स्थापन का मार्ग प्रसस्त किया। जर्मनी व इटली का एकीकरण, लातीन अमरीक में बड़ी संख्या में नए राज्य भी स्थापित किये गये थे। राज्य की सीमाओं के सुड्ढीकरण के साथ स्थानीय निस्ठाएं और बोलियां भी उत्तरोतर रास्ट्रीय निष्ठा और सर्वमान्य भाषाओं के रूप में विकसित हुई। लेकिन राष्ट्रवाद बड़े -2 साम्राज्यों के पतन मैं भी सहभागी रहा। आस्ट्रिया, इसी साम्राज्य हगंरी तथा एशिया व अफ्रिका, ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच, पुर्तगाली साम्राज्य के विघटन के मूल में रास्ट्रवाद ही थी। भारत तथा अन्य औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्र होने के संघर्ष भी राष्ट्रवादी संघर्ष थे। 19 वीं सदी के अंत तक निरंकुश राज्य सीमित या संवैधानिक राज्यों मैं बदल गये। जो आगे चलकर यही राज्य लोकतांत्रिक राज्यों में में बदल गये।

गैर - यूरोपिय राष्ट्रवाद

19 वीं सदी के अंत तक यूरोप के भीतर राष्ट्रवाद का प्रसार हुआ। इस समय पूरोप से दुनिया के दूसरे भागों में भी राष्ट्रवाद का प्रसार होने लगा। इस सन्दर्भ में व्यापार और उपनिवेशवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यूरोपिय शक्तियों ने अपने फायदे के लिए एशिया, अफ्रिका लेटीन अमेरीका में आंतरिक क्षेने पर उ कब्जा कर लिया।

इस संदर्भ में इतिहासकार बनेडिक्ट एंडरसन का मामला है कि प यूरोपिय औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा एशिया, आफ्रिका, लेटीन अमरीका में असावधानी या भूलवश राष्ट्रवाद के विचारों को लाया गया, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों ने औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलायी। द्वितिय विश्व युद्ध के बाद अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्राज्यवाद की वैधता में कमी आई।

राष्ट्रवाद का विभिन्न अवधारणाओं से संबंध:

राष्ट्रवाद और आधुनिक संस्कृति

कार्ल वॉलफैंग ड्युश ने अपनी कृति नेशनलिज्म एंड सोशल उम्युनिकेशन (1962) में यह तर्क दिया कि राष्ट्रवाद विशिष्ट रूप से आधुनिकता से जुड़े सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति है। इसी तरह अर्नेस्ट गेलनर ने अपनी कृति नेशन्स एंड नेशनलिज्म (1993) में राष्ट्रवाद और संस्कृति के बीच संबंधों का विश्लेषण किया है। गेलनर यह तर्क दिया है कि राष्ट्र राष्ट्रवाद को नहीं बनाते बल्कि राष्ट्रवाद राष्ट्रों को बनाता है। राष्ट्रवाद बडी परंपराओं के आधार पर आधुनिक राष्ट्र का निर्माण करता है। जैसे भारत में हिंदू राष्ट्रवाद या हिन्दुत्व के उभार को समझने ले सकते हैं, गेलनर ने यह भी दिखाना चाहते हैं कि राष्ट्रवाद का आधुनिक औद्योगिक समाज की जरूरत से संरचनात्मक जुड़ा है।

राष्ट्रवाद और पूँजीवाद

मार्क्सवादी इस बात पर जोर देते हैं कि राष्ट्रवादी चिंतन में एकता की बातें खोकली होती हैं। इनका मानना है कि इस तरह के दावे आधुनिक और पूंजीवाद दुनिया की वास्तविक

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्थिति में नहीं दिखते। बैंडिक्ट एंडरसन ने मार्क्सवादी नजरिया पर उन्होंने राष्ट्रों को काल्पनिक समुदायों की संख्या दी है।

राष्ट्रवाद पश्चिमी या पूर्वी

पश्चिमी और पूर्वी राष्ट्रको की तुलना करने के दौरान कुछ विद्वानों ने पूर्वी राष्ट्रवाद को पश्चिमी राष्ट्रवाद के स्वस्थ मूल्यों की कमी का शिकार बताया है । कुछ विद्वान करते हैं कि पश्चिमी राष्ट्रवाद ऐतिहासिक प्रक्रिया से निकलने के अलावा कहीं अधिक संस्कृतिक है जबकि पूर्वी राष्ट्रवाद उपनिवेशवादी विरोधी राजनीतिक आंदोलनों के हाथों गढे जाने के कारण मूलतः राजनीतिक हैं। यदि तीसरी दुनिया के लोगों के राष्ट्रवाद पर प्रजातीय, जातीय, सांस्कृतिक पहलू हावी हैं तो उनके पीछे उपनिवेशवाद की भूमिका है।

विश्लेषण और समीक्षा

राष्ट्रवादी विचारधारा में हमने आधुनिकीकरण तथा पूर्व और पश्चिम के बीच संबंधों की विवेचना की। इसमें यह बात सामने आती है कि राष्ट्रवाद आधुनिकता के भौतिक तथ्य का विचार धारात्मक सहयोगी है। राष्ट्रवाद का आधुनिकता से संरचनात्मक जुड़ाव है। लेकिन आधुनिकता का राष्ट्रवाद से जुडाव इतना सीधा-साधा नहीं है। यह बात अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता के खिलाफ राष्ट्रवादी विरोध से स्पष्ट है। इसकी और से यह नतीजा निकालना भी गलत है कि पूर्वी राष्ट्रवाद गैर उदारवादी और अधिक खतरनाक है और पश्चिमी राष्ट्रवाद तार्किक, उदार, और सर्वदेशी हैं । एली केडूरी, टॉन नार्मन और इजाया बर्लिन जैसे विद्वानऑन ने तार्किक रूप से यह विचार रखा है कि दोनों ही राष्ट्रवादों में आंतरिक तत्व पाए जाते हैं जैसे भारत में काली मां और रोमन साम्राज्य में धर्म ।

शोध पद्धति

प्रारंभिक लेखों, पुस्तकों, अनुसंधान प्रतियों, और अन्य स्रोतों का संग्रह किया जो राष्ट्रवाद, वैश्विकरण, और इससे संबंधित विषयों पर हैं। उपलब्ध स्रोतों के संदर्भ में शोध किया और महत्वपूर्ण विवरणों को नोट लिखे। संशोधन के दौरान, उत्पन्न जानकारी को संदर्भों के साथ समाहित किया गया। अध्ययन के मुख्य प्रश्नों और सिद्धांतों का विवेचन किया गया, जैसे कि राष्ट्रवाद की परिभाषा, वैश्विकरण के प्रमुख कारक, आदि । अध्ययन के लिए इस्तेमाल की गई जानकारी को आंकलित और विश्लेषित किया, ताकि मुख्य धाराओं और प्रमुख चुनौतियों का संकेत मिले सके। मुख्य प्रश्नों और उद्देश्यों से प्राप्त नतीजों का सारांश मिला । यह सारांश शोध के प्रमुख प्रासंगिकताओं और नई दिशाओं का सुझाव देगा ।

परिणाम और चर्चा

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने राष्ट्रवाद को जबरदस्त चुनौती दी है। 20 की सदी के आखरी 2 दशकों और 21 वीं सदी के पहले दशक के बाद कहा जा सकता है कि कम से कम दुनिया का वर्ग एक सी भाषा बोलता है, एक की यात्राएं करता है, एक सा खाना खाता है। उसके लिए राष्ट्रीय सीमा कोई खास मायने नहीं रखती। इसके अलावा आर्थिक वैश्वीकरण बड़े पैमाने पर आवागमन, इंटरनेट जैसी प्रौद्योगिकी प्रगति ने दुनिया की दूरी बहुत कम कर दी है। यूरोप की धरती ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया था और अब वहीं पर यूरोपीय संघ का उदय राष्ट्रवाद का महत्व कम कर रहा है। इन दोनों में सच्चाई है लेकिन केवल आंशिक रूप से एक राजनीतिक शक्ति के रूप में राष्ट्रवाद आज भी निर्णायक बना हुआ है। उदार और लोकतांत्रिक राज्य के साथ जुड़कर गरीबी और पिछडेपन से पीडित समाजो को आगे बढ़ाने में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। उत्तर औपनिवेशिक राज्यों ने अपने विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में राष्ट्रवाद का सहारा लिया है।

निष्कर्ष

यह शोध पत्र राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है। राष्ट्रवाद के उदय और विकास के संदर्भ में इसने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण किया है। साथ ही, वैश्वीकरण की प्रक्रिया और इसके प्रमुख कारकों को भी ध्यान में रखते हुए, इसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, संचार, तकनीकी उत्पादन, और सांस्कृतिक विनिमय के प्रभावों का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में, राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के संबंध में उठने वाले चुनौतियों और नई संभावनाओं को भी विचार किया गया है। यह शोध पत्र राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के महत्वपूर्ण मामलों को समझने और उन्हें समाधान करने के लिए नई दिशाओं की राह दिखाता है।

सिफारिशे

संबंधित विषयों पर और अधिक गहराई और विस्तार में अध्ययन किया जा सकता है, जैसे कि आधुनिक राष्ट्रवाद के विभिन्न संस्करणों का तुलनात्मक विश्लेषण और उनके प्रभाव का मूल्यांकन । अधिक संपूर्ण और आवश्यक जानकारी के लिए अन्य विश्वासीय स्रोतों का अध्ययन किया जा सकता है, जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्ट्स, संयुक्त राष्ट्र जैसे आधिकारिक साइट्स और शोध पत्रिकाएं । अधिक तार्किक विश्लेषण के लिए प्रभावी समाधानों और नीतियों का प्रस्ताव किया जा सकता है, जो सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्तरों पर अनुशंसाएं प्रदान कर सकते हैं । इस अध्ययन के नतीजे को सार्वजनिक करने के लिए संबंधित नीतिकर्मियों, नागरिक समाज, और सरकारों को संदेश पहुंचाया जा सकता है ताकि उन्हें इस संदर्भ में सहायक नीतियों का निर्माण करने में मदद मिले ।

स्वीकृति

यह सिफारिशें स्वीकार्य हैं और इसे अध्ययन के अगले चरण में शामिल किया जाना चाहिए। इन सुझावों को ध्यान में रखते हुए, हमें अधिक व्यापक और गहरा अध्ययन करने का अवसर मिलेगा और विषय के प्रति और भी समर्पित होने का संकेत मिलेगा। इसके अलावा, हमें संग्रहित जानकारी के अनुसार अधिक सामाजिक, आर्थिक, और नैतिक मुद्दों के संबंध में विचार करने का अवसर मिलेगा। इस तरह, हम इस अध्ययन के माध्यम से नई विचारधारा और नीतियों के प्रस्तावों को विकसित कर सकते हैं जो सामाजिक परिवर्तन और उत्थान को प्रोत्साहित करेंगे।

हितों का टकराव: शून्य

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Anderson, Benedict. Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism. London: Verso; 1983; 6-7.
2. Gellner, Ernest. Nations and Nationalism. Ithaca, NY: Cornell University Press; 1983;1-15.
3. Giddens, Anthony. The Nation-State and Violence: Volume 2 of A Contemporary Critique of Historical Materialism. Berkeley, CA: University of California Press. 1987;1-30.
4. Hobsbawm, Eric. Nations and Nationalism since 1780: Programme, Myth, Reality. Cambridge: Cambridge University Press; 1990;1-11.
5. Breuilly, John. Nationalism and the State. Chicago: University of Chicago Press; 1994;1-25.
6. Kedourie, Elie. Nationalism. Oxford: Blackwell; 1993;1-20.
7. Ozkirimli, Umut. Theories of Nationalism: A Critical Introduction. Basingstoke, UK: Palgrave Macmillan. 2010;1-25.
8. Smith, Anthony D. The Ethnic Origins of Nations. Oxford: Blackwell; 1986;1-19.
9. Smith, Anthony. "Nationalism and Modernism: Recent Theories of Nations and Nationalism." Routledge; 1998;110-130.
10. Anderson, Benedict. "Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism." Verso Books; 2006;1-15.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/